#### प्र.1 लेखक के अनुसार, जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर लेखक के अनुसार, जीवन में 'सुख' से अभिप्राय केवल भोग-उपभोग से ही नहीं है, बल्कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सुख भी सुख की श्रेणी में ही आते हैं। आजकल भोग-उपभोग को ही सुख मान लिया गया है। अतः अधिक-से- अधिक मात्रा में वस्तुओं के उत्पादन पर ज़ोर दिया जा रहा है। आजकल विलासितापूर्ण वस्तुओं का उपभोग ही सुख की परिधि में शामिल किया जाता है।

# प्र.2 आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर आज की उपभोक्तावादी संस्कृति में हम दिखावे के लिए ब्रांडेड परिधान, ब्रांडेड महँगे सींदर्य प्रसाधन, महँगी घड़ियाँ, पाँच सितारा होटल, स्कूल और अस्पतालों आदि का उपयोग करने लगे हैं। इस संस्कृति का सबसे नकारात्मक प्रभाव हमारे सामाजिक सरोकारों पर पड़ा है। नैतिकताएँ एवं मर्यादाएँ भंग हो रही हैं। मनुष्य आत्मकेंद्रित होता जा रहा है। इससे अशांति और आक्रोश बढ़ रहा है। समाज दिग्भमित होकर जीवन के व्यापक एवं महात लक्ष्य से पीछे हटता जा रहा है।

#### प्र.3 लेखक ने उपभोक्तावादी संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?

उत्तर उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक नींव को हिलाकर रख दिया है। भारतीय दर्शन 'सादा जीवन उच्च विचार' पर विश्वास करता है तथा भारत मर्यादाओं और नैतिकताओं का पक्षधर है, जबिक उपभोक्तावादी संस्कृति ठीक इसके विपरीत है। यह केवल वस्तुओं के उत्पादन, संचय और उपभोग पर बल देती है, जिसके प्रभाव में आकर हम अपनी सांस्कृतिक पहचान भूलते जा रहे हैं, इसलिए इस संस्कृति को हमारे जीवन के लिए चुनौती कहा गया है।

#### प्र.4 आशय स्पष्ट कीजिए

- (क) जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।
- (ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हों।

उत्तर (क) प्रस्तुत कथन का आशय यह है कि आज चारों तरफ़ विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन और उपभोग पर ज़ोर दिया जा रहा है। विज्ञापनों के माध्यम से इसका सूक्ष्म प्रभाव हमारे चरित्र पर भी गहराई से पड़ रहा है। परिणामस्वरूप इन उत्पादों को हम अपने लिए ज़रूरी मानने लगे हैं और दैनिक जीवन इन उत्पादों पर निर्भर होता चला जा रहा है। उपभोग करते-करते हम इसके ग्लाम होते जा रहे हैं।

(ख) इस कथन का आशय यह है कि प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए लोग विभिन्न तरीकों को अपनाते हैं, चाहे उस कार्य से प्रतिष्ठा प्राप्त होने के बदले हमारी स्थिति हास्यास्पद ही क्यों न हो जाए अर्थात् लोग हँसी ही क्यों न उड़ाएँ। हम धन के उपयोग और उपभोग के समक्ष यह भूल जाते हैं कि वास्तविक प्रतिष्ठा किसमें है? उदाहरण के लिए, अमेरिका में लोग मरने से पूर्व ही अपनी समाधि का प्रबंध करने लगे हैं।

#### रचना और अभिव्यक्ति

प्र.5 कोई वस्तु हमारे लिए उपयोगी हो या न हो, लेकिन टीवी पर विज्ञापन देखकर हम उसे खरीदने के लिए अवश्य लालायित होते हैं, क्यों?

उत्तर टीवी पर प्रसारित होने वाले विज्ञापन अत्यंत प्रभावशाली, सम्मोहक (आकर्षक) होते हैं। विज्ञापन दृश्य और श्रव्य माध्यमों से हमें बार-बार प्रभावित करते हैं, जिससे हम उसके मोह में पड़कर उन्हें खरीदने के लिए लालायित हो जाते हैं। उस समय हमें ध्यान नहीं रहता कि वह वस्तु हमारे लिए उपयोगी है या अनुपयोगी? उपभोक्ताओं में विज्ञापित वस्तु को खरीदने की लालसा भर देना ही विज्ञापन की सार्थकता होती है।

#### प्र.6 आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन। तर्क देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मेरे अनुसार, वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवता होनी चाहिए, न कि विज्ञापन। सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि घटिया वस्तुओं का विज्ञापन काफ़ी तड़क-भड़क एवं मनोरंजनपूर्ण होता है। कई बार भड़कीले एवं अश्लील विज्ञापन के माध्यम से वस्तुओं को खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है; जैसे-तबला बजाते हुए 'वाह ताज' कहकर गुणवता नहीं बताई जा सकती। चाय की ताज़गी ताज से नहीं, बल्कि उसको तैयार किए जाने के तरीके से पता चल सकती है। विज्ञापन में इन बातों का उल्लेख करना चाहिए।

#### प्र.7 पाठ के आधार पर आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर इस पाठ में लेखक ने प्रबल विरोध किया है। हमारे समाज में एक विशिष्ट वर्ग है, जिसके लिए उच्च कोटि की महँगी वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है, परंतु सामान्यजन भी उनकी बराबरी करने के लिए या लालचवश उसका उपभोग करने लगे हैं। दिखावे की इस संस्कृति के कारण वर्ग भेद पनप रहा है। स्वार्थ, अशांति और आक्रोश (क्रोध) में बढ़ोतरी हो रही है। स्वार्थपरता ने जन्म लिया है। हमें इस दिखावे की प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखना होगा, नहीं तो यह भारत की मूल संस्कृति को नष्ट कर देगी।

#### प्र.8 आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे रीति-रिवाज़ों और त्योहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर हमारी नई जीवन-शैली ने तीज-त्योहारों तथा रीति-रिवाज़ों के स्वरूप को ही बदल दिया है। त्योहार हमारी सांस्कृतिक पहचान हैं। इनसे आपसी भाईचारा संवेदना के स्तर पर सुदृढ़ होता है। पहले बड़े त्योहार होली, दशहरा, दीपावली, ईद पर परिवार के सभी सदस्य इकट्ठे होते थे, परंतु आज दीपावली मनाने के नाम पर लोग मॉल या क्लब जाते हैं, सिनेमा देखते हैं, खाते-पीते हैं और देर रात घर वापस आते हैं। धार्मिक पूजा-पाठ कराने वाले विद्वान् की जगह सीडी और कैसेट्स ने ले लिया है। वह दिन दूर नहीं, जब भावी पीढ़ी उपभोक्तावादी

संस्कृति के मकड़जाल में पड़कर भारतीय रीति-रिवाज़ों और त्योहारों को एक मनोरंजन का साधन समझने लगेगी।

Sources: Govindo Sir - Hindi Teacher, BMSSS

Hindi Guide Book

